SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

मुगलकाल में मध्यमवर्गीय समाज : व्यापारियों का स्थान और महत्व

रंजु कुमारी, शोधार्थी, इतिहास विभाग,
विनोबाभावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
रंजु कुमारी, शोधार्थी, इतिहास विभाग,
विनोबाभावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 22/01/2021
Revised on : -----
Accepted on : 01/02/2021
Plagiarism : 01% on 22/01/2021

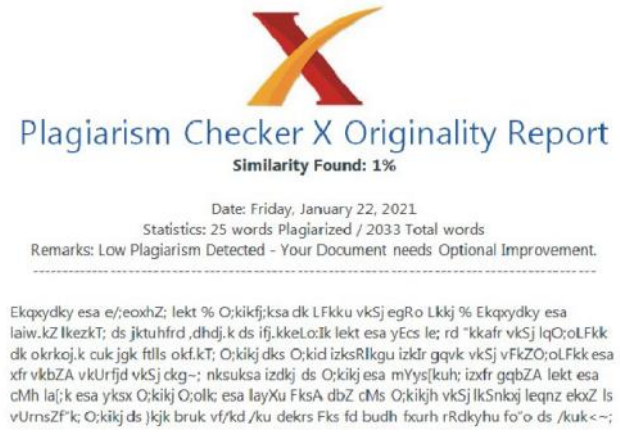
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Friday, January 22, 2021
Statistics: 25 words Plagiarized / 2033 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Ekqxydky esa e/;eoxhZ; lekt % O;kikfj;ksa dk LFkku vkSj egRo Lkkj % Ekqxydky esa laiw.kZ lkezkT; ds jktuhfrd ,dhdj.k ds ifj.kkeLo:Ik lekt esa yEcs le; rd "kkafr vkSj lqO;oLFkk dk okrkoj.k cuk jgk ftlls okf.kT; O;kikj dks O;kid izksRlkgu izkIr gqvk vkSj vFkZO;oLFkk esa xfr vkbZA vkUrfjd vkSj ckg~; nksuksa izdkj ds O;kikj esa mYys[kuh; izxfr gqbZA lekt esa cMh la{;k esa yksx O;kikj O;olk; esa layXu FksA dbZ cMs O;kikjh vkSj lkSnkxj leqnz ekxZ ls vUrnsZf"k; O;kikj ds)kjk bruk vf/kd /ku dekrs Fks fd budh fxurh rRdkyhu fo"o ds /kuk<~;

शोध सार

मुगलकाल में संपूर्ण साम्राज्य के राजनीतिक एकीकरण के परिणामस्वरूप समाज में लम्बे समय तक शांति और सुव्यवस्था का वातावरण बना रहा, जिससे वाणिज्य व्यापार को व्यापक प्रोत्साहन प्राप्त हुआ और अर्थव्यवस्था में गति आई। आन्तरिक और बाह्य दोनों प्रकार के व्यापार में उल्लेखनीय प्रगति हुई। समाज में बडी संख्या में लोग व्यापार व्यवसाय में संलग्न थे। कई बडे व्यापारी और सौदागर समुद्र मार्ग से अन्तर्देशिय व्यापार के द्वारा इतना अधिक धन कमाते थे कि इनकी गिनती तत्कालीन विश्व के धनाढ्य व्यापारियों में की जाती थी। आन्तरिक व्यापार भी समृद्ध अवस्था में था। व्यापारी साम्राज्य के एक भाग से दुसरे भाग तक स्वतंत्रता पुर्वक व्यापार करते थे। सभी मुगल शासकों ने व्यापारियों की सुरक्षा तथा यातायात और संचार माध्यमों के विकास पर पर्याप्त ध्यान दिया, जिसके परिणामस्वरूप व्यापार व्यवसाय में तेजी आई। इसका अत्यंत ही सकारात्मक प्रभाव राज्य और समाज दोनों पर पड़ा। शहरीकरण की प्रक्रिया ने भी व्यापार व्यवसाय के विकास में अपना योगदान दिया। ग्रामीण स्तर पर भी स्थानीय व्यापारी और दुकानदार थे जो ग्रामीणों को दैनिक आवश्यकता की सामग्री उपलब्ध करवाते थे। छोटे व्यापारी गाँव के अधिशेष कृषि उत्पादन तथा कारीगरों और शिल्पियों द्वारा तैयार माल को खरीदकर कस्बों और शहरों में ले जाकर बेचते थे जिससे ग्रामीणों को नगद आय प्राप्त होती थी। इस प्रकार स्थानीय व्यापार के द्वारा ग्रामीणों को रोजगार के नये–नये अवसर प्राप्त होते थे। इससे जनसाधारण के आय में वृद्धि हुई तथा वे अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ बौद्धिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की ओर भी ध्यान देने लगे। इस प्रकार भारतीय समाज में व्यापारियों और व्यवसायियों की उपस्थिति से मध्यम वर्ग के उद्‌भव और विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ।

मुख्य शब्द

सौदागर, अन्तर्देशीय, धनाढ्य, संचार, शहरीकरण.

परिचय

प्राचीनकाल से ही भारतीय समाज में विभिन्न प्रकार के व्यापार व्यवसाय का प्रचलन रहा है। सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त मुहरें तत्कालीन विश्व के अन्य देशों के साथ व्यापारिक संबंध की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करतीं हैं। ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह स्पष्ट है कि सभी कालों में वाणिज्य व्यापार राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर फलते फुलते रहे हैं। यद्यपि राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार विदेशी व्यापार में कई बार गिरावट भी देखने को मिलती है; परन्तु मुगलकाल तक भारतीय व्यापारी अपने गाँव, कस्बे और शहर को पार करते हुए देश की सीमा को भी पार कर अपने व्यापार व्यवसाय का अत्यधिक विस्तार कर चुके थे। प्रायः सभी मुगल शासक वाणिज्य व्यापार को महत्व देते हुए इसे साम्राज्य के आर्थिक प्रगति हेतु आवश्यक मानते थे। मुगल शासकों ने व्यापारियों की सुरक्षा तथा व्यापारिक मार्गों के विकास हेतु सभी आवश्यक कदम उठाये जिससे व्यापार व्यवसाय को पर्याप्त प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब समेत सभी उत्तरवर्ती शासकों ने अपने शासनकाल में आन्तरिक और विदेश व्यापार को बढ़ावा दिया तथा व्यापार की सुगमता हेतु अनेक प्रकार की रियायतें प्रदान की। शासकवर्ग की अनेक महिला जैसे नुरजहाँ, जहाँआरा आदि ने व्यापार व्यवसाय में पर्याप्त रूचि दिखाई। शहरीकरण और मुद्रा व्यवस्था के विकास के परिणामस्वरूप भी व्यापार व्यवसाय में तेजी आई। कृषि के क्षेत्र में सुधार के परिणामस्वरूप उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई जिससे ग्रामीणों की स्थिति में सुधार हुआ। कृषिकर से प्राप्त आय को मुगल शासकों ने वाणिज्यिक पूँजी में परिवर्तित किया जिससे आर्थिक गतिविधियां तेज हुई तथा लोगों को रोजगार के नये–नये अवसर प्राप्त हुए। समाज में व्यापारियों की संख्या में वृद्धि हुई। ये व्यापारी अपने वाणिज्यिक गतिविधियों के साथ–साथ सामाजिक कार्यों में भी पर्याप्त रूचि लेते थे। आवश्यकता पड़ने पर ये ग्रामीणों को ऋण भी प्रदान करते थे। शहरों में रहने वाले बड़े व्यापारी अत्यधिक धनवान थे इनकी पहुँच उच्च अधिकारियों तक थी। ये अपने जाति या समुदाय के आधार पर संगठित थे। अपने व्यवसायिक हितों की रक्षा तथा राजकीय कर्मचारियों के शोषण के खिलाफ हड़ताल पर भी चले जाते थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि समाज में व्यापारियों का प्रभावशाली स्थान था तथा शासक वर्ग के लोग भी इनके हितों को नजरअंदाज नहीं करते थे।

शोध प्रविधि

इस शोध आलेख के लेखन में द्वितियक सामग्री का प्रयोग किया गया है।

अवलोकन

मध्य काल में भारतीय वाणिज्य व्यापार आन्तरिक और बाह्य दोनों ही मोर्चे पर अत्यन्त ही समृद्ध अवस्था में था। विशेषकर मुगलकाल में तो इसमें आश्चर्यजनक वृद्धि हुई। प्रायः सभी मुगल बादशाह वाणिज्य व्यापार के महत्व के प्रति जागरूक थे। प्रमुख वाणिज्यिक क्षेत्र गुजरात, बंगाल और सिंध को विजित करने और थल मार्गीय व्यापार के दो प्रमुख केन्द्रों काबुल और कंदहार पर नियंत्रण स्थापित करने की मुगलों की प्रयत्न की तुलना तैमुर के मध्य एशियाई व्यापार पर नियंत्रण रखने के प्रयासों से की जा सकती है।[1] मुगल प्रशासनिक व्यवस्था से जुड़े अमीरों ने भी व्यापार व्यवसाय में पर्याप्त रूचि लेते हुए इसे अपने अतिरिक्त आय का साधन बना लिया। कई राजकीय अधिकारी तथा उनके विश्वासपात्रों ने अलग–अलग क्षेत्रों में व्यापार का एकाधिकार प्राप्त करने की कोशिश की। 1633 में मोहनदास डांडा नामक एक गुजराती बनिये को राज्य में उत्पादित नील की खरीददारी का एकाधिकार दे दिया गया।[2] बंगाल का सुबेदार मीरजुमला ने अंग्रेजों को सोडा आपूर्ति का एकाधिकार प्राप्त करने का प्रयास किया। उसके उत्तराधिकारी शाइस्ता ख़ाँ ने नमक, मधुमक्खी के छत्ते से बने मोम और सोने की खरीददारी पर एकाधिकार स्थापित करने का प्रयत्न किया।[3] शाही परिवार के सदस्य भी व्यापार व्यवसाय में रूचि लेते थे। उनके अपने–अपने व्यापारिक जहाज होते थे जो लालसागर के बंदरगाहों तथा दक्षिणपूर्व एशिया के बीच चलते थे। जहाँगीर, नूरजहाँ

और शहजादा खुर्रम के पास अपने जहाज थे जो सूरत और लालसागर के बीच चलते थे। दारा शिकोह, औरंगजेब और जहाँआरा के भी अपने जहाज थे। गोलकुण्डा के एक अमीर मीरजुमला के पास जहाजों का एक बेड़ा था जो बंदर अब्बास, लालसागर के बंदरगाह और दक्षिणपूर्व एशिया के साथ व्यापार करता था।[4] शाही परिवार के सदस्य आवश्यकता पड़ने पर व्यापारियों को धन भी उधार देते थे। मुगलकाल में कृषि का भी विस्तार और विकास हुआ। सिंचाई के साधनों की उपलब्धता तथा बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने हेतु मुगल शासकों ने कई कदम उठाये जिसके परिणाम स्वरूप उपज में अप्रत्याशित वृद्धि हुई तथा कृषिकर से प्राप्त होने वाली आय में भी वृद्धि हुई। कृषि से प्राप्त कर, व्यापार कर के अपेक्षा अधिक थी। मुगल शासकों ने कृषि अधिशेष को वाणिज्यिक पूँजी में बदलकर व्यापार व्यवसाय के लिए पूँजी की उपलब्धता बढ़ा दी। व्यवसायिक फसलों के उत्पादन के विस्तार ने भी व्यापार को बढ़ावा दिया।[5] अकबर ने व्यापार पर लगने वाले विभिन्न प्रकार के करों को हटाकर सिर्फ एक प्रकार के कर लगाने की अनुमति दी जिससे व्यापार के विकास का मार्ग सुगम हुआ।

मुगलकाल में व्यापारी वर्ग के लोग गाँव और शहर दोनों जगह निवास करते थे। कुछ लोग अन्तर्देशिय व्यापार करते थे तो कुछ अन्य स्थानीय और फुटकर व्यापार करते थे।[6] बड़े व्यापारी जिन्हें सेठ, वोहरा या मोदी के नाम से जाना जाता था अन्तर्देशिय व्यापार करते थे। इनके पास इतना धन था कि इनमें से कुछ की गिनती समकालीन विश्व के धनाढ्य व्यापारियों में की जाती थी। पुर्तगाली व्यापारी गोडिन्हों ने 1663 में लिखा कि सूरत के व्यापारी अति धनाढ्य हैं, जिनमें से कुछ की औकात 50 लाख रूपये से अधिक की है।[7] कुछ व्यापारी इतने धनी थे कि वे 100 जहाजों के स्वामी थे और राजसी ठाठ से रहते थे।[8] सूरत के व्यापारी वीरजी वोहरा के पास जहाजों का विशाल बेड़ा था तथा उसकी संपत्ति 80 लाख रूपये के आसपास थी। इसी प्रकार एक अन्य गुजराती व्यापारी अब्दुल गफुर वोहरा भी अत्यधिक धनवान था, अपनी मृत्यु के समय वह 89 लाख रूपये तथा 17 समुद्री जहाजों का मालिक था। 17वीं शताब्दी में मारवाड़ी साहूकार हीरानंद साहू आम्बेर से आकर बिहार में मान सिंह का साहूकार हो गया और उसका पुत्र माणिकचंद बंगाल में मुर्शिद कुली खॉ का साहूकार बना और इतना धन अर्जित किया की उसे जगत सेठ कहा जाने लगा।[9] अमीरचंद नाम का एक साधारण व्यक्ति जो एक छोटे व्यापारी के रूप में अपना जीवन शुरू किया और बाद में पटना के टकसाल का मालिक बन गया।[10] व्यापारियों की समृद्धि राजनीतिक संरक्षण पर निर्भर करती थी। कई बार इन्हें ईर्ष्या का शिकार भी होना पड़ता था। शासकों द्वारा जब्त कर लिये जाने के डर से ये अपनी संपत्ति का प्रदर्शन नहीं करते थे तथा मितव्ययी जीवन व्यतीत करते थे। यद्यपि राज्य द्वारा व्यापारियों को अनेक प्रकार की सुरक्षा प्रदान की गई थी। किसी भी व्यापारी की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति को राज्य द्वारा जब्त नहीं किया जाता था।

गाँव और कस्बों में भी स्थानीय व्यापारी और दुकानदार थे जो अनाज तथा अन्य सामग्री को नजदीक के मंडी में ले जाकर बेचते थे। छोटे दुकानदार ग्रामीणों की आवश्यकता के अनुसार सामान उपलब्ध करवाते थे। ये अनाज, सब्जी, घी, मक्खन आदि बेचने का कार्य करते थे। गाँव में फेरीवाले कपड़े, श्रृंगार प्रसाधन तथा अन्य छोटी–मोटी वस्तुयें बेचते थे। ये व्यापारी गाँव में निर्मित सामान कस्बों और शहरों में ले जाकर बेचते थे। लेनदेन में नगद मुद्रा तथा वस्तुविनिमय दोनों हीं प्रचलित थे। व्यापारिक गतिविधियों ने रोजगार के अवसर तथा आय के साधनों को बढ़ाया जिससे समाज में मध्यम वर्ग के लोगों की संख्या बढ़ी। इस वर्ग के लोगों को इतनी आय हो जाती थी कि ये अपनी दैनिक आवश्यकता की पूर्ति करने के बाद भविष्य के लिए कुछ बचत भी कर लेते थे। अपनी इस बचत का कुछ भाग वे विभिन्न प्रकार के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक कार्यों में लगाते थे जिससे समाज में उनका प्रभाव बढ़े। धन की आवश्यकता होने पर व्यापारी महाजनों से सूद पर ऋण भी लिया करते थे। मुगल व्यापारियों की ईमानदारी और कार्य पद्धति की प्रशंसा विदेशी यात्रियों ने भी की है।[11]

नगरों में रहने वाले व्यापारी धर्म या जाति के आधार पर संगठित थे। सूरत में जैनों का अपना संगठन था जिसका प्रधान एक बड़ा सेठ था। व्यापारी अपने उचित माँग को मनवाने तथा अधिकारियों द्वारा सताये जाने के खिलाफ हड़ताल भी किया करते थे, अहमदाबाद में व्यापारियों के हड़ताल के उदाहरण मिलते हैं।[12] हैदराबाद के हिन्दु साहूकारों ने ट्रेवर्नियर के रहते हुए हीं एक अमीर द्वारा धन ऐंठनें के विरोध में अपने कारोबार के दरवाजे बंद

कर लिए तथा जब शासन द्वारा उनके जब्त जायदाद वापस करने का आदेश दिया गया तभी उन्होंने अपने कारोबार पुनः शुरू किए। इसी प्रकार 1668–69 में एक व्यक्ति को जबरन मुसलमान बनाये जाने के खिलाफ सूरत के बनिये हड़ताल पर चले गये।[13] इससे यह स्पष्ट होता है कि समाज में व्यापारियों का महत्वपूर्ण स्थान था। शासक वर्ग के द्वारा भी इन्हें नजरअंदाज नहीं किया जाता था।

मुगलकाल में बनाये गये कई लघुचित्रों में मध्यमवर्गीय पेशों और पेशावरों का चित्रण मिलता है। इन चित्रों में सौदागरों से संबंधित महत्वपूर्ण चित्र हैं। एक चित्र में बादशाह हुमाँयु को सौदागरों को वे माल लौटाते दिखाया गया है जिन्हें मिर्जा कामरान की फौज ने लुटा था।[14] एक देहाती बाजार के चित्र में एक महिला को दुकान संभालते दिखाया गया है।[15] इन चित्रों में फेरीवाले, थोक व्यापारी, दुकानदार तथा कस्बों के बाजारों का चित्रण है। अकबर के समय के दो लघु चित्र फतेहपुर सीकरी के प्रसिद्ध चहारसुक बाजार और हाथीपोल के पास के बाजार का चित्रण करते हैं।[16] कस्बाई बाजार के चित्रों में दुकानदारों को चबूतरे पर शामियाना लगाकर सामान बेचते हुए दिखाया गया है।

मुगल बादशाहों ने प्रशासनिक सुविधा के लिए अनेक राज मार्गों का निर्माण करवाया और उसके सुरक्षा की व्यवस्था की जिसके परिणामस्वरूप व्यापारिक गतिविधियों में तेजी आई। अब वे स्वतंत्रता पूर्वक एक प्रदेश से दुसरे प्रदेश में व्यापार करने लगे जिससे उनकी आय भी बढ़ी और व्यापारिक वस्तुओं की विविधता और मात्रा में भी वृद्धि हुई।[17] इन व्यापारियों ने कभी भी अपने धन का प्रदर्शन नहीं किया क्योंकि उन्हें भ्रष्ट और लोभी नौकरशाहों द्वारा लूट लिये जाने की आशंका थी। बर्नियर ने भी कहा है कि व्यापारी वर्गों ने लाभ के बावजुद दरिद्रता का जीवन व्यतीत किया।[18]

निष्कर्ष

उपरोक्त तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि समाज में व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों की संख्या कम नहीं थी। इनमें विश्व के धनाढ्य व्यापारी से लेकर छोटे ग्रामीण दुकानदार तक शामिल थे। ये अपने धन को छुपाकर रखते थे तथा मितव्ययी जीवन व्यतीत करते थे। ये प्रदर्शन में रूचि नहीं रखते थे। यद्यपि राज्य द्वारा इन्हें सभी प्रकार की सुरक्षा उपलब्ध करवाई जाती थी। मृत्यु के बाद भी इनके धन को जब्त नहीं किया जाता था फिर भी ये खर्च में कंजुसी बरतते थे। अपने–अपने जाति और समुदाय के आधार पर इनका संगठन था। ये सामाजिक और धार्मिक कार्यों में भी रूचि लेते थे। सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान था। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि व्यापारी वर्ग मुगलकालीन मध्यमवर्गीय समाज के महत्वपूर्ण अंग थे।

संदर्भ सुची

1. सतीश चन्द्र, (2016), *मध्यकालीन भारत सल्तनत से मुगलकाल तक, भाग–2,* (1526–1761), जवाहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्युटर्स, नई दिल्ली, पृष्ट संख्या– 425,
2. 'वही', पृष्ट सं0– 425,
3. 'वही', पृष्ट सं0– 426,
4. 'वही', पृष्ट सं0–426,
5. रहीस सिंह, (2015) मध्यकालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था, मैकग्रोहिल एजुकेशन इंडिया प्रा0 लि0 पृष्ट सं0– 16.7।
6. 'वही', पृष्ट सं0– 400,
7. 'वही', पृष्ट सं0–400,

8. महाजन, वी0 डी0 (2016), *मध्यकालीन भारत 1000 ई0 से 1761 ई0 तक,* एस0 चन्द एण्ड कंपनी प्रा0 लि0, रामनगर, नईदिल्ली, पृष्ट संख्या– 229।
9. वर्मा, हरिश्चंद्र, (2015) *मध्यकालीन भारत भाग– 2 (1540–1761),* हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, पृष्ट सं0– 461,
10. 'वही', पृष्ट सं0–461।
11. अहमद, इमत्याज, (2016), *मध्यकालीन भारत 8वीं से 18वीं शताब्दी एक सर्वेक्षण,* नेशनल पब्लिकेशन, खजॉची रोड, पटना, पृष्ट सं0– 488।
12. सतीश चन्द्र, (2016) *मध्यकालीन भारत सल्तनत से मुगलकाल तक, भाग– 2 (1526–1761),* जवाहर पब्लिशर्स एवंडिस्ट्रीब्युटर्स, नईदिल्ली, पृष्ट संख्या– 402।
13. 'वही', पृष्ट सं0–402।
14. हबीब, इरफान, (2008), *मध्यकालीन भारत,* अंक–7, राजकमल प्रकाशन नईदिल्ली, पृष्ट सं0– 133।
15. 'वही', पृष्ट सं0– 133।
16. 'वही', पृष्ट सं0–133।
17. अहमद, लईक, (2009), *मध्यकालीन भारतीय संस्कृति,* शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृष्ट सं0– 216।
18. मेहता, जे0 एल0, (2013), *मध्यकालीन भारतीय का बृहत् इतिहास,* खण्ड–3, अनु0 नरेश कुमार राजलीवाल, जवाहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्युटर्स, नईदिल्ली, पृष्ट संख्या– 342।

****